प्रश्नोत्तर तत्त्व बोध

प्रश्नोत्तर तत्त्व बोध एक तात्त्विक कृति है। नई विधा, नव्य शैली में रचित यह कृति अत्यन्त रोचक और हृदयग्राही रचना है। इस कृति के २७ अधिकार, १७०२ पद्य हैं। उन्होंने इतनी विशाल कृति को साढ़े चार महिने में पूर्ण की। उस समय जयाचार्य की उम्र ७२ साल की थी।

'जिनाज्ञामुख मंडन', संदेह विषौषधि', पार्श्वनाथ चरित्र, ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती, भरत-बाहुबली, जिनशासन-महिमा, झीणीचरचा, प्रश्नोत्तर तत्त्व बोध विविध ध्यान विधियां, स्तुति काव्य, रोचक संस्मरण, भिक्षुकृत मर्यादाओं का वर्गीकरण आदि जयाचार्य की एक सौ चौदह (११४) कृतियाँ अनुपम दीप शिखाएं हैं।

भिक्षु-जस-रसायन

जयाचार्य रचित 'भिक्षु-जस-रसायन' आचार्य श्री भिक्षु के गरिमामय जीवन प्रसंगों की जानकारी देने वाला उच्चतम कोटि का ग्रंथ है। जयाचार्य अनूठे जीवन शिल्पी थे।

प्रस्तुत ग्रन्थ में भिक्षु के जीवन का शानदार चित्रांकन उनके अद्‌भुत शब्द शिल्पन का बेजोड़ नमूना है। इस कृति की रचना से धर्म-संघ अत्यधिक लाभान्वित हुआ है।

जयाचार्य की भावपूर्ण गेय कृतियों में अध्यात्म रस से सराबोर आराधना और चौबीसी विशिष्ट स्वाध्याय ग्रंथ हैं। आराधना की दस गीतिकाएँ हैं, उनका लयबद्ध संगान व्यक्ति को अन्तर्मुखी बनाता है। इसकी आठवीं गीतिका उतार-चढ़ाव में झूलते हुए भावों को बल देने में संजीवनी का काम करती है।

चौबीसी के चौबीस गीतों में तीर्थंकरों की भावपूर्ण स्तवना है। प्रत्येक स्तुति प्रभावशाली स्तुतिकाव्य है।

जयाचार्य ने सहस्रों गीत रचे। इनमें 'विघ्नहरण' 'मुणीन्दमोरा', 'भिक्षुम्हारै प्रगट्याजी' यह गीत त्रयी चामत्कारिक' घटनाओं से जुड़ी हुई है। आज भी संकट की घड़ी में इनका विशेष रूप से स्मरण किया जाता है।

जयाचार्य में साहित्य-रचना की रुचि सहज थी, पर किसी बात का आग्रह नहीं था। जयाचार्य धर्म-दर्शन, अध्यात्म संबंधी विविध विषयों के ज्ञाता थे। जैन ज्योतिष का भी उन्हें अधिकृत ज्ञान था। एक बार उन्होंने पांच सौ वर्षीय जैन पंचांग बनाने का चिन्तन किया। यह जैन पर्वों की एकता के लिए उठाया गया कदम था। इस ग्रंथ की रचना का प्रारंभ कर दिया, किन्तु एक जैन मुनिवर के परामर्श पर पंचांग ग्रंथ रचना स्थगित कर दी।

इतिहास लेखन में उनका अनुपम अनुदान है। उन्होंने जैन इतिहास के साथ तेरापंथ के इतिहास को भी बहुत समृद्ध किया। 'भिक्षु जस रसायण' ग्रंथ में स्वामी जी के केवल गुणानुवाद ही नहीं, अपितु विविध दृष्टांतों के आधार पर तात्त्विक विवेचन भी है।

इतिहास लिखने की यह सुंदर परंपरा तेरापंथ धर्म संघ में जयाचार्य ने स्थापित की। उन्होंने अनेक साधु-साध्वियों तथा श्रावक श्राविकाओं के जीवन-चरित्र भी लिखे।

'भिक्षु दृष्टांत' संस्मरणात्मक साहित्य है। इन संस्मरणों की भाषा सरल एवं प्रसाद गुण युक्त है। अपने शिक्षा गुरु मुनि श्री हेमराजजी स्वामी की सन्निधि में उनसे सुनकर लिखे गये ये संस्मरण इतिहास की अमूल्य निधि है। इस कृति में आचार्य भिक्षु से संबंधित जीवंत घटनाओं का बेजोड़ संकलन कर धर्म संघ की एक महान् धरोहर को संरक्षित किया है। तेरापंथ धर्मसंघ में संस्मरणात्मक साहित्य लेखन परम्परा का यह आदि बिन्दु है। हेम दृष्टांत, श्रावक दृष्टांत आदि लिखकर उन्होंने धर्मसंघ को विपुल सामग्री अर्पित की।

जयाचार्य ने सामान्य घटनाओं को भी अपनी लेखनी का विषय बनाकर तेरापंथ के इतिहास को काफी समृद्ध किया है, संरक्षित किया है।

उपदेश कथाकोश, कथा साहित्य का अनुपम ग्रंथ है। इसमें लोक कथाओं, पौराणिक कथाओं तथा ऐतिहासिक कथाओं का विशाल संग्रह है। शिक्षात्मक सूक्तों से कथाएँ सरस एवं उपयोगी हो गई है। ये दोनों रचनाएँ जयाचार्य के बहुमुखी ज्ञान की सूचक है।

जयाचार्य के साहित्य में आधुनिक शोध पद्धति के दर्शन होते हैं। आचार्य भिक्षु के साहित्य में प्रतिपादित विषयों को आगमिक आधार पर पुष्ट कर उनकी रचनाओं को जयाचार्य ने शोध ग्रंथ का रूप दिया, यह उनकी तुलनात्मक अध्ययन पद्धति एवं अनुसंधानात्मक प्रवृत्ति का उपक्रम एवं साहित्य के क्षेत्र में नई परंपरा का सूत्रपात था। 'सिद्धान्तसार' उनका एक विशाल शोध ग्रंथ है।

जयाचार्य उच्च कोटि के भाष्यकार थे। उन्होंने आचार्य भिक्षु की कृतियों के आधार पर अपने साहित्य को गति दी, आगे बढ़ाया। उनके आदेशों, निर्देशों को भी कविता, गीत एवं विविध छंदों में निबद्ध कर उन्हें सुग्राह्य बनाया, सुपाच्य बनाया, सरसता प्रदान की। आचार्य भिक्षु कृत मर्यादाओं का भी वर्गीकरण कर, 'गणविशुद्धिकरण हाजरी' की अभिधा से उन्हें नई पहचान दी, नया रूप दिया।

जयाचार्य ने आचार्य भिक्षु की अनेक रचनाओं में समागत विषय को शास्त्र सम्मत प्रमाणित कर भाष्य तैयार किए। उनका आगम वाणी पर रचित भाष्य साहित्य अत्यन्त मर्मस्पर्शी है, जो युगों-युगों तक जैनागम के विद्यार्थियों हेतु आलोक स्तंभ का कार्य करता रहेगा।

तप योग

जयाचार्य दिग्गज विद्वान् थे, आगम पुरुष थे। उग्रविहारी थे इन विशेषताओं के अतिरिक्त तपोयोग में भी उनका सहज रुझान था। वि.सं. १८७५ (ई. १८१८) के पाली-चातुर्मास में उन्होंने चालीस (४०) उपवास किए। एकान्तर तप भी लम्बे समय तक किए।

एक बार चातुर्मास की सम्पन्नता के बाद गुरुदर्शनार्थ विहार के प्रसंग में उन्होंने संकल्प किया, जब तक गुरु दर्शन न कर लूं, तब तक छः विगय वर्जन करूंगा। यह वि. सं. १८७५ (ई.स. १८१८) किसी कारण वश चन्द दिनों में सम्भावित गुरुदर्शन तेरह (१३) मास पश्चात् हुए, पर बालमुनि जय ने दृढ़ मनोबल का परिचय देते हुए, अपने छह विगय वर्जन का संकल्प यथावत् पालन कर, सुगुरु आस्था की महनीय नजीर पेश की।

स्वाध्याय योग

जयाचार्य की स्वाध्याय साधना भी अतुल थी। जीवन के अन्तिम आठ वर्षों में उन्होंने लगभग ८६६७४५० आगम पद्यों का स्वाध्याय किया था। वि. सं. १९३८ श्रावण मास के सोलह दिनों में १६७०० आगम पद्यों का एवं ६०२४२ के लगभग आगमेत्तर पद्यों का स्वाध्याय किया। यह भी जीवन का एक कीर्तिमान है।

समय संकेत

जयाचार्य आगम स्नात प्रज्ञा के धनी थे। उन्होंने अपने अड़सठ वर्षीय मुनि जीवन में तीस वर्ष तक आचार्य पद के दायित्व का कुशलतापूर्वक वहन किया। उनके शासन काल में कुल ३२९ दीक्षाएं हुई। जिनमें १०५ सन्त और २२४ साध्वियाँ थी।

जैन धर्म में संयमी जीवन के साथ समाधि मरण वरण का भी कम महत्त्व नहीं है। जयाचार्य ने कलात्मक ढंग से संयमी जीवन जीया। अन्तिम क्षण तक वे अपनी चर्या में सावधान थे। देह शक्ति क्षीण होने का आभास होते ही उन्होंने अनशन (संथारा) स्वीकार कर लिया। पूर्ण जागरूक अवस्था में तीन हिचकी के साथ उनकी आंखें खुली। उसी मुद्रा में दो प्रहरी अनशन में जयाचार्य का वी.नि. २४०८ (वि.सं. १९३८, ई. १८८१) भाद्रव कृष्णा द्वादशी को स्वर्गवास हुआ। उस समय धर्म संघ में २०५ साध्वियाँ और ७१ सन्त विद्यमान थे।

जयाचार्य के परम भक्तों में एक नाम जयपुर नरेश रामसिंह जी का विश्रुत है। उम्र में जयाचार्य से तीन दशक कम होने पर भी जयपुर नरेश रामसिंह जी का स्वर्गवास ई. सन् १८८० में पूज्य प्रवर के एक साल पहले ही हो गया था। जयाचार्य का स्वर्गवास ई.१८८१ में हुआ। भक्ति परायण राजमाता के विशेष निर्देश से राजकीय लवाजमे के साथ बैकुंठी में विराजमान जयाचार्य की जय जय के उद्घोषों से ध्वनित यह शानदार अंतिम यात्रा जयपुर के मध्य बाजार से बढ़ती हुई त्रिपोलिया बाजार एवं अजमेरी गेट को पार कर जब रामनिवास बाग में पहुँची, विश्वविभूति आचार्य जय के अंतिम दर्शन हेतु अपार जन सैलाब उमड़ पड़ा। जिस स्थान पर उनका अन्तिम संस्कार हुआ, आज भी उस राम निवास बाग में स्थित श्वेत मार्बल से निर्मित उनका पुनीत स्मारक जैन, जैनेतर सभी के लिए आस्था का धाम बना हुआ है।

तेजस के पर्याय

ज्योतिपुंज जयाचार्य जैन जगत् की विरल विभूति थे। तेजस् के पर्याय थे। अध्यात्म के शिखर थे। वे एक तपे हुए, पगे हुए, खपे हुए, सधे हुए योगी पुरुष थे। प्राणवान साधक थे। उर्जस्वल व्यक्तित्व के धनी थे। आने वाले युग की आहट को पहचानने में माहिर थे। उनकी प्रशासनिक शैली एवं परिस्थिति को समझने की पैनी पकड़ बड़ी विलक्षण थी।

जयाचार्य के तीन दशक के आचार्य काल में प्रत्येक वर्ष का काल धर्म संघ के लिए विशिष्टता लिये उभरा। उन्होंने अपने शासनकाल में संघ-संगठन को हर प्रकार से सुदृढ़ बनाया। लेखनकला, चित्रकला, वक्तव्य कला आदि अनेक कलाओं का विकास उनके शासन काल में विशेष रूप से सामने आया। आपने चालू व्यवस्थाओं में भी परिष्कार किया। संघ की आन्तरिक प्रवृत्तियों में संविभाग एवं श्रमदान की समव्यवस्थाएं स्थापित की।

जयाचार्य अपने युग के महान् दीप्तिमान युग-पुरुष थे। उन्होंने द्वितीय भिक्षु के रूप में महान् ख्याति अर्जित की एवं धर्म संघ को नया निखार दिया।

आज भी धर्म संघ की व्यवस्थाओं में जयाचार्य के कर्तृत्व की दिव्य झलक दृश्यमान है। उनका विशाल वाङ्मय अध्यात्म का पावर हाऊस है। उनकी सार गर्भित रचनाएं रोशनी की मीनारें हैं।

❑❑❑